1) इत्र क्या है?
इत्र का उपयोग वस्तुओं को सुगंधित बनाने के लिए और कीड़े- मकोड़ों को दूर रखने के लिए किया जाता है। बाइबल में इत्र का कई बार उल्लेख होता है, विशेष रूप से पवित्र विधियों, बलिदानों और आराधना के कार्यों के संदर्भ में।

कई बार बाइबल में इत्र समर्पण, बलिदान की भावना और सम्मान का प्रतीक होता है। एक प्रसिद्ध घटना है जब एक स्त्री ने बहुत ही मूल्यवान इत्र यीशु के सिर पर उड़ेल दिया। यह आराधना और श्रद्धा का कार्य यीशु की सेवा में एक महत्वपूर्ण क्षण बन गया।

मत्ती 26:6–13 (ERV-HI):
6 यीशु जब बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में ठहरा हुआ था,
7 तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमूल्य इत्र का तेल लेकर उसके पास आई और जब वह भोजन कर रहा था तो उसने वह इत्र
उसका सिर पर उंडेल दिया।
8 यह देखकर उसके चेलों ने क्रोधित होकर कहा, “यह अपव्यय क्यों हुआ?
9 इस इत्र को तो ऊँचे दाम पर बेचकर वह धन कंगालों को दिया जा सकता था।”
10 यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, “तुम इस स्त्री को क्यों परेशान करते हो? इसने मेरे लिए एक उत्तम काम किया है।
11 क्योंकि कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।

12 इस स्त्री ने यह इत्र मेरे शरीर पर इसलिए उंडेला है कि वह मुझे गाड़ने की तैयारी कर रही थी।
13 मैं तुमसे सच कहता हूँ, संसार में जहाँ भी यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ इस स्त्री ने जो किया है, उसकी भी चर्चा उसकी स्मृति में की जाएगी।”

यह कीमती इत्र उसकी गहरी प्रेम और समर्पण का प्रतीक था। यहूदी परंपरा में इत्र को अंतिम संस्कारों में मृतकों के प्रति सम्मान दर्शाने के लिए भी प्रयोग किया जाता था। इस घटना में स्त्री अनजाने में यीशु को उसके क्रूस-मरण के लिए तैयार कर रही थी। उसका कार्य भविष्यसूचक था और उसके महान प्रेम का प्रमाण था।

एक और उदाहरण है जब मरियम मगदलीनी और अन्य स्त्रियाँ यीशु के शव को क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद इत्र और सुगंधित वस्तुएँ तैयार करती हैं यह मृत्यु के बाद भी आराधना का संकेत था।

लूका 23:56 (ERV-HI):
“फिर वे लौट गईं और इत्र और सुगंधित पदार्थ तैयार किए; और उन्होंने विश्राम दिन पर व्यवस्था के अनुसार विश्राम
किया।”

इन सुगंधित पदार्थों की तैयारी मृतकों के प्रति सम्मान की परंपरा को दर्शाती है, और यहाँ यह भी संकेत है कि यीशु का बलिदान मानवजाति के लिए पूर्ण था। इत्र केवल सुगंध के लिए नहीं, बल्कि आत्मिक समर्पण और आराधना का भी प्रतीक है।

2) धूप क्या है?
धूप सुगंधित पदार्थ होते हैं जिन्हें जलाकर सुगंध उत्पन्न की जाती है। प्राचीन धार्मिक विधियों में धूप को बलिदानों और आराधना के अंग के रूप में ईश्वर को सम्मान देने के लिए जलाया जाता था। पुराने नियम में परमेश्वर ने इस्राएलियों को उसकी आराधना में पवित्र स्थान और मंदिर में धूप चढ़ाने की आज्ञा दी थी।

निर्गमन 30:34–38 (Hindi O.V.):
34 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तू कुछ सुगंधित वस्तुएँ लेना: बाला, ऊँच, और गलबानुम, ये सुगंधित वस्तुएँ और शुद्ध लवाना,
सब एक ही मात्रा में हों।
35 और तू उनसे एक सुगंधित धूप तैयार करना जैसा इत्र बनाने वाला बनाता है, नमक डालकर शुद्ध और पवित्र करना।
36 और उसमें से कुछ महीन पीसकर चढ़ाव की वाचा की संदूक के सामने साक्षात्कारवाले तम्बू में रखना जहाँ मैं तुझसे भेंट करता हूँ; यह तुम्हारे लिये अति पवित्र वस्तु होगी।

37 और जो धूप तू बनाए, उसी नाप से अपने लिये मत बनाना; वह
तेरे लिये यहोवा के लिये पवित्र वस्तु ठहरे।
38 जो कोई उसके समान कुछ बनाएगा कि उसकी गंध सूँघे, वह अपने लोगों में से काट डाला जाएगा।”

यह धूप, जिसमें विशेष रूप से धूप राल भी होती थी, पवित्र मानी जाती थी यह परमेश्वर के सामने प्रार्थनाओं के उठने का प्रतीक थी।

नए नियम में भी धूप को आत्मिक रूप में देखा जाता है:

प्रकाशितवाक्य 8:3–4 (Hindi O.V.):
3 फिर एक और स्वर्गदूत आया, जिसके पास सोने का धूपदान था; वह वेदी के पास खड़ा हुआ। उसे बहुत सा धूप दिया गया, कि सब
पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ उसे सोने की वेदी पर चढ़ाए, जो सिंहासन के सामने है।
4 और उस धूप का धुआँ, पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ, स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के पास ऊपर गया।

ये पद दर्शाते हैं कि स्वर्ग में धूप विश्वासियों की प्रार्थनाओं का प्रतीक है आत्मिक समर्पण और आराधना का चिह्न।

जैसे इत्र परमेश्वर की आराधना में प्रयोग होता था, वैसे ही धूप भी आत्मिक भेंट और प्रार्थनाओं का प्रतीक है, जो प्रेम और श्रद्धा से परमेश्वर के सामने चढ़ाई जाती है। जैसे पुराने नियम में यह आराधना का महत्वपूर्ण अंग था, वैसे ही आज भी यह हमें ईश्वर से हमारे संबंध की गहराई का स्मरण कराता है हमारी प्रार्थनाएँ धूप के सुगंधित धुएँ की तरह उसके पास उठती हैं।

इत्र (सुगंधित तेल) और धूप दोनों का बाइबल में गहरा आध्यात्मिक अर्थ है।
ये समर्पण, बलिदान और सम्मान के प्रतीक हैं। चाहे वह स्त्री हो जिसने यीशु के सिर पर कीमती इत्र उड़ेला, या वह धूप जो विश्वासियों की प्रार्थनाओं के साथ परमेश्वर के पास उठती है ये सुगंधित वस्तुएँ हमें याद दिलाती हैं कि आराधना और श्रद्धा हमारे परमेश्वर से संबंध में कितना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

मरनाथा!
कृपया इस शुभ समाचार को औरों के साथ बाँटें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□? □□ □□□ □□□□ □□?

Share on:
WhatsApp